संगठनः क्यों और कैसे?

एक बड़ी पुरानी कहानी है। एक किसान के चार बेटे थे। सब अपनी-अपनी मर्जी के मालिक। किसान के पास थोड़ी सी ज़मीन थी। उसका बुढ़ापा आया। उसने सोचा मेरे मरने के बाद तो ये लड़के आपस में लड़ मरेंगे। थोड़ी सी जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हो जाएंगे। इनमें से किसी का पेट नहीं भरेगा। उसका अंत समय पास आया तो चारों बेटों को बुलाया। किसान ने कहा कुछ लकड़ियां ले आओ। सब बेटों को एक-एक लकड़ी देकर कहा—इसे तोड़ो। हर लड़के ने चटाचट लकड़ी तोड़ दी। किसान ने कहा सब लकड़ियों का गट्ठर बांध दो। अब इसे तोड़ो। सब बेटों ने बारी-बारी ताक़त आजमाई। कोई उस गट्ठर को न तोड़ पाया। किसान ने कहा—"बेटा मिल कर नहीं रहोगे तो अकेली लकड़ी की तरह टूट जाओगे। संगठन में ताक़त है।"

कहानी भले ही पुरानी हो। उसकी सीख आज भी सौ पैसे सच है। इतिहास बताता है कि हर दबे हुए वर्ग ने संगठन का सहारा लिया है। चाहे वह गरीब मजदूर हों या भूमिहीन किसान हों। जिन लोगों के पास अपनी कोई ताक़त नहीं। यानि पैसे की ताक़त, सत्ता की ताक़त, रुतबे या पद की ताक़त। ऐसे लोग आपस में मिल कर गिनती की ताक़त बनाते हैं।

एक और एक ग्यारह

यह बात गणित के हिसाब से ठीक नहीं है। संगठन के हिसाब से ठीक है। हम जानती हैं कि समाज में औरत की अपनी कोई ताक़त नहीं है। वह थोड़ी बहुत ताक़त मर्द से पाती है। मर्द उसका शोषक भी है। अगर अपनी ताक़त चाहिए तो पहले बहुत सी ताक़तहीन औरतें मिल कर गिनती की ताक़त पैदा करें। फिर उसके ज़रिए अपने अंदर ताक़त पैदा करनी है। ताकि आगे चल कर अपने बलबूते पर जिंदा रह सकें।

संगठन से ताक़त तो मिलती ही है। उसके अलावा और भी कई फायदे हैं।

1. संगठन के द्वारा ऐसे उद्देश्य पाए जा सकते हैं जो एक अकेली औरत के बस के नहीं।
2. संगठन के द्वारा कितने ही हाथ, कितने ही दिमाग और विचार मिल कर काम करते हैं।
3. संगठन के काम में निरंतरता होती है। अगर एक दो साथी चली भी जाएं तो काम चलता रहता है। नई साथिनें आ जाती हैं।

संगठन बने कैसे?

संगठन बनने की अपनी एक प्रक्रिया है। कभी-कभी उसके लिए बाहरी मदद ली जा सकती है। पर पहले अपनी इच्छा होनी ज़रूरी है। अगर संगठन बनाने की इच्छा और उद्देश्य वहां की धरती से नहीं जन्मे हैं तो वह पेड़ फल-फूल नहीं सकता।

औरतें सदा से आपस में मिल कर काम करती आई हैं। चाहे पनघट पर पानी भरना हो, जंगल में लकड़ी-चारा लेने जाना हो या अपने आंगन में बैठ कर धान साफ करना हो, पापड़-बड़ियां बनानी हों। हमारे यहां आपस में एक दूसरे की मदद करने की परंपरा है।

इसी तरह संगठन भी एक साथ मिल कर काम करना ही है। इस संगठन का उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक कुछ भी हो सकता है। उद्देश्य निर्भर करता है उन औरतों की अपनी ज़रूरतों पर।

मिसाल के लिए किसी गांव में औरतें मिल कर शहर में सब्जी या जलावन की लकड़ी बेचने का काम करना चाहती हैं ताकि उन्हें थोक दुकानदार से अच्छे दाम मिलें। या वे ठेकेदार से मजदूरी बढ़वाने या गांव में हैंडपम्प लगवाने के लिए संगठित होना चाहें। या गांव की बहू-बेटी के अत्याचार के खिलाफ कुछ कदम उठाना चाहें।

उद्देश्य : सबसे पहले उन्हें अपने संगठन के उद्देश्य तय करने पड़ेंगे। एक बार जब उद्देश्यों के बारे में सभी साथिनें एकमत हो जाएंगी तब अगला कदम होगा तरीके तय करना।

रणनीति : अपना उद्देश्य पाने के लिए वे क्या तरीके अपनाना चाहती हैं। उसके लिए एक कार्यक्रम बनाना होगा। कुछ समय निश्चित करना होगा और जिम्मेदारी का बंटवारा भी किया जाएगा। यह सब तय हो जाने पर हम कह सकती हैं कि संगठन बन गया है। यह एक अनौपचारिक संगठन रहेगा। आगे चल कर अगर सदस्याएं चाहें तो इसे रजिस्टर भी कराया जा सकता है।

सहयोग : संगठन का एक ज़रूरी मुद्दा है आपसी सहयोग। संगठन में रह कर न सिर्फ अपनी योग्यता और ताक़त की पहचान होती है बल्कि दूसरों की भी। उनकी योग्यता की कद्र करते हुए मिल कर काम करना ज़रूरी होता है। संगठन और ज्यादातर लोगों की भलाई के लिए कभी-कभी अपने छोटे हित को छोड़ना भी पड़ता है। तभी संगठन सफल हो सकता है। □

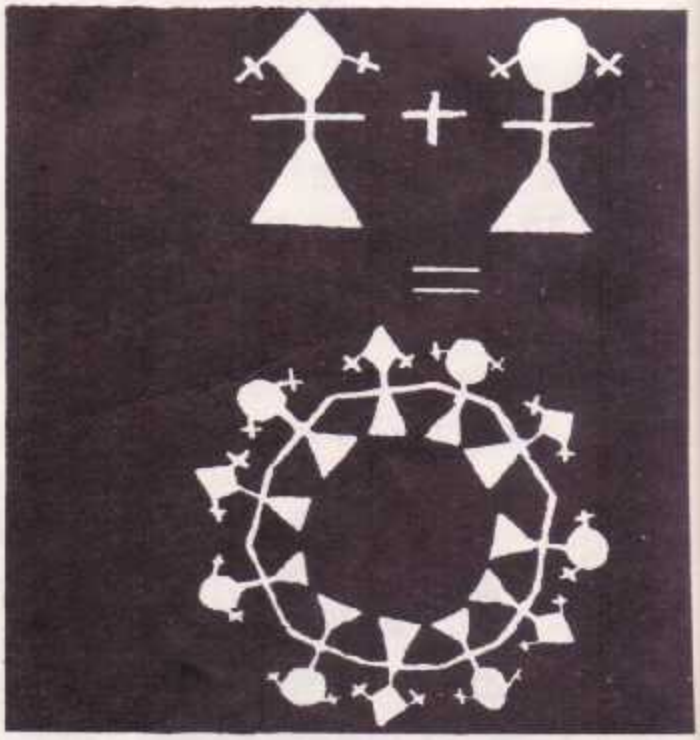

साभार—काली फॉर वीमेन

वीणा शिवपुरी

(रामलाल और कमला दोनो दिहाड़ी मज़दूर हैं। उनके साथ रामलाल की बूढ़ी मां रहती है। रामलाल और कमला के तीन बच्चे हैं। दो बेटियां और एक बेटा। बड़ी बेटी मुन्नी कई दिनों से बीमार है।)

कमला—मां, मुन्नी जाग गई है। रात का एक कटोरी दूध बचा है। मुन्नी को दे दे। हम सब काली चाय पी लेंगे।

मां—कौन सा दूध? रात का दूध तो मैंने बिटवा को पिला दिया। फिर लड़की जात को दूध की क्या ज़रूरत? ज़रा लगाम खींच कर रख।

कमला—ला फिर चाय ही दे दे। बेचारी चार दिन से भट्टी सी तप रही है। मां, इसकी मास्टरनी जी से कह दीजो। अभी दो-चार दिन पढ़ने ना आ सकेगी।

मां—बस, बस, बहुत हुआ कमला। अब इसकी पढ़ाई लिखाई बंद करा दे। इत्ती बड़ी हो गई। घर का कामकाज संभाले।

कमला—बेचारी पढ़ाई के साथ रोटी-पानी भी तो करती है। चार अक्षर पढ़ लेगी तो जून सुधर जाएगी।

(रामलाल अंदर आता है)

रामलाल—कमला, कल की मजूरी के पैसे दे तो। मैं बिटवा को मेला दिखाने ले जा रहा हूं। फिर तू भी काम पे जा। इस छोरी के साथ टैम बरबाद तो कर मती।

कमला—कल के तो बस पांच रुपए बचे हैं। वो मुन्नी की दवाई की खातिर रखे हैं।

रामलाल—पागल हुई है क्या? पांच रुपए डाकदर को दे देगी? कोई ज़रूरत ना है। चार दिन में आप ही ठीक हो जाएगी।

कमला—चार दिन तो पहले हो चुके हैं, इसकी हालत तो और बिगड़ रही है।

रामलाल—*(चिल्ला कर)* बिगड़ रही है तो बिगड़ने दे। भाग में है तो वैद जी की पुड़िया से चंगी हो जाएगी। नहीं हुई तो भी ठीक। खुद भी पार लगेगी और हमारा बोझ भी कम होगा।

मां—अरी लड़कियां तो घूरे पे ही पल जावे हैं। उन्हें कोई दवा दारू नहीं चाहिए।

कमला—अच्छा, कम से कम वैदजी की पुड़िया तो ला दो।

रामलाल—तू ले आना। मेरे पास टैम नहीं

है। चल और खोटी मत कर। पांच रुपए निकाल और काम पे जा। नहीं तो दूंगा दो हाथ।

(कमला दुखी मन से पल्ले में बंधे रुपए खोल कर रामलाल को दे देती है)

सवाल

1. क्या लड़कियों के साथ आमतौर पर ऐसा बरताव होता है या सिर्फ किसी-किसी घर में?
2. किन-किन बातों से मुन्नी और कमला के गिरे हुए दर्जे के बारे में पता लगता है?
3. घर में कमाई करने वाले कौन-कौन हैं?
4. घर में फैसले लेने की ताक़त किसके पास है?
5. मुन्नी बड़ी हो कर मां जैसी बनेगी या बाप जैसी? क्यों?
6. रामलाल और मां की ताक़त किस चीज की है—
   शरीर की
   कमाई की
   सामाजिक व्यवस्था की?

सामाजिक व्यवस्था

इस घर में कमला भी बराबर कमाई करती है। वह मां से ज्यादा जवान और तगड़ी है फिर भी घर में ताक़त रामलाल और मां के हाथ में है। यह ताक़त शरीर या कमाई की नहीं, बल्कि इन दोनों की ताक़त को इस्तेमाल करने के हक़ की है।

कमला शरीर से तगड़ी है लेकिन मारने का हक़ रामलाल और मां को है।

कमला कमाती है पर उसे खर्च करने का हक़ रामलाल को है।

कमला बच्चे पैदा करती है लेकिन उन्हें खाना और इलाज मिले या नहीं, यह तय करने का हक़ रामलाल और मां को है।

परिवार और समाज के ऐसे ढर्रे को पितृसत्तात्मक व्यवस्था कहते हैं। जिस व्यवस्था में घर, जमीन, जायदाद और कमाई का मालिक घर का मर्द हो। पूरे परिवार के बड़े फैसले भी वही करता हो। सबको उसकी मर्जी के हिसाब से चलना पड़ता हो। घर के कायदे कानून भी वही बनाता हो। वंश का नाम उसके नाम से चलता हो। जिस व्यवस्था में पितृ यानि पिता के हाथ में सत्ता या ताक़त हो।

कभी-कभी पुरुष के जरिए कुछ ताक़त औरत को भी मिल जाती है जैसे रामलाल की मां को मिली।

अगर रामलाल न चाहे तो मां के पास कोई ताक़त न रहे। पितृसत्ता के तहत औरत के पास अपनी कोई ताक़त नहीं है। इसी कारण कई बार औरत खुद औरत के रास्ते की अड़चन बनती है। जैसे मां नहीं चाहती कि मुन्नी को दूध मिले या वह पढ़ने जाए। वह बिटवा को खुश करना ज्यादा अच्छा समझती है। बड़े होकर रामलाल की ताक़त बिटवा को ही मिलेगी।

इसी व्यवस्था की वजह से लड़कियों को शिक्षा नहीं मिलती। पूरा खाना और देखभाल नहीं मिलती। अनपढ़, बीमार और कमजोर औरत अपने हक़ की लड़ाई भी नहीं लड़ पाती।

□